पुरानी कहानी, नये सवाल

मैं अंबा हूं। जन्म से मैं एक राजकुमारी थी। महाभारत के महारथी भीष्म मुझे अपनी दो बहनों के साथ हस्तिनापुर लाए। वहां मेरी शादी भीष्म के भाई विचित्र वीर के साथ होनी थी। मैं राजकुमार शाल्व से प्यार करती थी। मैंने शादी से इंकार किया।

भीष्म ने कहा तुम वापस शाल्व के पास जा सकती हो। लेकिन शाल्व एक कमज़ोर पुरुष था। उसने मुझे अपनाने से इंकार किया। मैं वापस भीष्म के पास गई। उन्होंने भी मुझे अपनाने से इंकार किया।

भीष्म ने मेरी ज़िंदगी से खिलवाड़ किया था। मैं उनसे बदला लेना चाहती थी। लेकिन किसी भी राजा ने मेरी मदद नहीं की। मैंने भगवान शिव को याद किया। वन में घोर तपस्या की। शिवजी ने खुश हो कर मुझे वरदान दिया। "अगले जन्म में तुम राजा द्रुपद के यहां शिखंडी बन कर पैदा होगी। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।" मैंने अपनी चिता खुद जलाई। सारी पीड़ा अकेले सही।

राजा द्रुपद के यहां लड़की का जन्म हुआ। लड़के की कामना रखने वाले मेरे पिता ने घोषणा करवाई—लड़का जन्मा है। मेरा लालन-पालन एक लड़के के समान हुआ। पढ़ना-लिखना सीखा। घुड़सवारी सीखी, हथियार चलाना सीखा। जब मैं बड़ी हुई तो मेरा ब्याह एक राजकुमारी के साथ होना तय हुआ। मैं घोड़े पर सवार हो वन चली गई। वहां एक खंडहर में मेरी मुलाकात स्थूनाम के यक्ष से हुई। उसने मेरी कहानी सुनी, मेरा दुख समझा। मुझे अपना पुरुष रूप दिया।

मैं अर्जुन के साथ लड़ाई के मैदान में गई। महाभारत की लड़ाई के दसवें दिन मैं लड़ाई के मैदान में भीष्म की मौत का कारण बनी। भीष्म ने मुझ पर तीर नहीं चलाया।

कुछ सवाल—1. औरत के रूप में अंबा भीष्म से बदला क्यों नहीं ले सकी?

2. क्या अपनी हिफाज़त के लिए पुरुष होना ज़रूरी है?

3. क्या नारी में साहस और हिम्मत होना काफी नहीं है?

4. क्यों बेइज्जती सिर्फ औरतों की होती है?

5. दोष किसी का हो, सज़ा औरतों को क्यों मिलती है।

चर्चा—क्या आपकी किसी सहेली के जीवन में इतना बदलाव आया है जिसे नया जन्म कहा जा सके?

साभार—'आस्था'
बंबई द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'स्त्री कथा'

पहेलियों के उत्तरः—

(1) बीमारियां (2) दस्त या पेचिश (3) बोरिंग (4) साफ पानी (5) हैजा या मलेरिया (6) पीलिया (7) मक्खियां और गंदा पानी (8) हैजा।

साभार—एकार्ड, नई दिल्ली